पूजा : शब्द परिचय

आह्वानन :- वीतराग स्वरूप या छवि को दृष्टि के समक्ष लाने का प्रयत्न करना। पूजा के समय इस क्रिया के सूचक तीन पुष्प क्षेपण करना चाहिए।

ओम(ॐ) :- पंच परमेष्ठी वाचक बीज मंत्र, मुक्ति प्रदाता।

काल पूजा :- तीर्थंकरों के पंच कल्याणक तिथियों एवं अष्टाह्निका आदि पर्व के दिनों में जिनेन्द्र भगवान की विशेष पूजा करना ।

क्षेत्र पूजा :- तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों की भूमि पर जिनेन्द्र भगवान की विशेष पूजा करना।

द्रव्य पूजा :- अर्हन्त आदि के सम्मुख अष्ट द्रव्य चढ़ाकर उनके गुणों की पूजा करना।

नाम पूजा :- अर्हन्त आदि के नामोच्चारण के आलम्बन से उनकी पूजा करना।

निर्वपामीति :- क्षेपण करना, निकटवर्ती होना, संसार की पीड़ा का विनाशक, निर्वाण का प्रारम्भक।

भाव पूजा :- हृदय में अर्हन्त आदि के गुणों का चिन्तन करना।

वषट् :- पूजा के आह्वानन के उच्चारित किया जाने वाला आह्वानन वाचक बीजाक्षर।

अष्टद्रव्य चढ़ाने की विधि

- जल व चन्दन को छोड़कर स्वास्तिक के स्थान पर अष्टक द्रव्य चढ़ाना चहिये।
- ॐ कार पर जयमाला का अर्घ एवं श्री १००८ के नाम का अर्घ भी वहीं पर चढ़ाना चाहिये।
- तीन बिन्दु के निशान पर सम्यक दर्शन, ज्ञानचारित्र का एवं देवशास्त्र गुरू का अर्घ चढ़ाना चाहिये।
- सिद्ध भगवान की जयमाला का अर्घ चन्द्रकार पर चढ़ाना चाहिये।
- दस बिन्दु के स्थान पर प्रत्येक स्वास्तिक क्रम से क्षेपण करना चाहिये।

अष्टद्रव्य चढ़ाने का अर्थ

- पूजन में जल चढ़ाने का अर्थ यह है कि जिस प्रकार जल में शीतलता होती है वैसी ही शीतलता मेरी आत्मा में बनी रहे।
- अक्षत इसलिए चढ़ाये जाते हैं कि आप अक्षय पद प्राप्त कर सकें।
- पुष्प चढ़ाने के पीछे भाव पुष्प के समान ऐश्वर्य और सुख की प्राप्ति का है।
- नैवेद्य चढ़ाने के पीछे भाव होते हैं कि हे भगवान, जिस प्रकार आपने अपने क्षुधावर्णी कर्मों का नाश किया है उसी प्रकार मेरे क्षुधावर्णी कर्मों का नाश हो जाए।
- दीपक चढ़ाने के पीछे भाव यह होता है कि जिस प्रकार भगवान का ज्ञान दीप के समान सारे संसार को आलोकित करता है ऐसा ही ज्ञान मेरी आत्मा में प्रकट हो।
- धूप चढ़ाने के पीछे भाव यह है कि जिस प्रकार धूप की सुगंध सारे प्रदूषण को खत्म कर देती है उसी प्रकार मेरी आत्मा का प्रदूषण नष्ट हो जाए।
- फल चढ़ाने के पीछे मोक्ष फल की प्राप्ति का भाव है।
- शान्ति धारा के पीछे सारे संसार में शान्ति होने की भावना होती है।